Date - 09-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - God idea : Shankaracharya

Scanned with CamScanner

## ईश्वर - विचार

शंकर के अनुसार माया की उपाधि से युक्त ब्रह्म ही ईश्वर है। यह सगुण ब्रह्म की स्थिति है। यही माया का कारण है।

## ईश्वर की विशेषताएँ :

(i) ईश्वर सर्वज्ञ है। उसे ज्ञान के लिए शरीर और इन्द्रियों की अपेक्षा नहीं है। वह नित्य ज्ञान स्वरूप है।

(ii) ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है।

(iii) ईश्वर कर्म - नियम का संचालक है। वह जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल प्रदान करता है।

(iv) ईश्वर संसार का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता एवं विनाश करता है। सृष्टि - रचना में ईश्वर का कोई प्रयोजन नहीं है। सृष्टि ईश्वर की लीला है।

(v) ईश्वर विश्व का निमित्त और उपादान कारण दोनों है।

(vi) ईश्वर विश्व में व्याप्त और विश्वातीत दोनों है।

(vii) ईश्वर व्यवहारिक सत्ता का सर्वोच्च रूप है।

## ब्रह्म - ईश्वर सम्बन्ध

ईश्वर और ब्रह्म दो पृथक सत्ताएँ नहीं हैं। ईश्वर मूलतः ब्रह्म ही है। पारमार्थिक दृष्टि से जो ब्रह्म है वही व्यवहारिक दृष्टि से ईश्वर है।

ईश्वर में विश्वास का एक विशिष्ट महत्व है। ईश्वर की उपासना से अज्ञानी की नास्तिकता दूर होती है

Scanned with CamScanner

तथा उसके चित्त की शुद्धि होती है। परिणामस्वरूप वह ब्रह्म-प्राप्ति के योग्य हो जाता है। इस प्रकार ईश्वर की उपासना ब्रह्म-प्राप्ति का एक आवश्यक सोपान है।

ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि के प्रमाण : शंकर के अनुसार ईश्वर का अस्तित्व किसी भी तर्क या युक्ति द्वारा नहीं सिद्ध किया जा सकता है। ईश्वर के अस्तित्व सिद्ध करने के लिए एकमात्र प्रमाण श्रुति ही है। शंकर के अनुरूप ही पाश्चात्य विचारक कांट ने भी यह माना था कि तर्क एवं बुद्धि के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner